छायावाद

छायावाद शब्द के प्रयोग के पहले इसका मूल नाम नई कविता था। द्विवेदी-युग में 'सरस्वती' में कुछ ऐसी कविताओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जिसमें हम छायावाद का मूल स्रोत प्राप्त करते हैं।

'छायावाद' का प्रयोग प्रारम्भ में व्यंग्य रूप से उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट थीं, जिनकी छाया (अर्थ) कहीं पड़ती थी। कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया (रहस्यवाद) का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी। छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट इन परिभाषाओं द्वारा हो सकती है:-

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल — "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए - एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहां इसका सम्बंध काव्यवस्तु से होता है, अर्थात् जहां कवि इस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत निजमयी सत्ता में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।—

छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल छायावाद का एक अर्थ रहस्यवाद मानते हैं और दूसरा अर्थ काव्य की विशिष्ट शैली स्वीकार करते हैं।

जयशंकर प्रसाद :— "कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरता के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में इसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। ...... ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं।"

डॉ० रामकुमार वर्मा :— "परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

डॉ० नगेन्द्र :— "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है यह एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।"

महादेवी वर्मा :— "छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीथ है। ...... इसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी :— "मानव तथा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"

आचार्य हजारी प्र० द्विवेदी :— "छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्यवादी भावना अवश्य थी। इस रहस्यवाद की मूल प्रेरणा अंग्रेजी की रोमांटिक भावधारा की कविता से प्राप्त हुई थी।"

इन परिभाषाओं के आधार पर छायावाद के स्वरूप के सम्बन्ध में निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:-

1. छायावाद में स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता दिखाई पड़ती है।
2. छायावादी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्ति विद्यमान होती है।
3. छायावाद प्रेम, प्रकृति एवं सौन्दर्य का काव्य है।
4. छायावाद की अभिव्यंजना पद्धति में नवीनता है।
5. छायावाद में स्वानुभूति की प्रधानता है।
6. छायावादी कविता अंग्रेजी की रोमाण्टिक काव्यधारा से प्रभावित है।
7. छायावाद में सांस्कृतिक चेतना, मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रमुखता है। इन लक्षणों का समावेश करते हुए छायावाद की एक सर्व-सम्मत परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है:-

"प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।"

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:-

(1) सौंदर्य - भावना,
2. प्रेम - भावना
3. मानवतावादी दृष्टिकोण
4. नूतन मूल्यों की अभिव्यक्ति
5. वैयक्तिकता का प्राधान्य
6. रहस्य - भावना
7. वेदना और निराशा
8. विज्ञान का प्रभाव
9. राष्ट्रीयता एवं विश्वप्रेम
10. शृंगारिकता की भावना
11. गीत और प्रगीत मुक्तक
12. प्रतीकात्मक शैली एवं अलंकार - योजना,

Scanned with Cam